B. A. III rd Pol. sc Unit-3 / Paper 8 +R

प्रश्न:— भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों की कार्य प्रणाली, सिद्धान्त एवं आंदोलन।

प्रश्न:— भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण का संक्षिप्त विवेचना करें।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण 1885 ई० से 1905 ई० तक माना जाता है। इसी काल में कांग्रेस की स्थापना हुयी, और भारतीयों ने शासन में क्रमिक सुधार की माँग की।

वैसे तो विभिन्न प्रांतों में अनेक राजनीतिक संगठनों की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी राजनीतिक संगठन का अभाव था। 1877 ई० के दिल्ली दरबार के अवसर पर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने ऐसी संस्था की आवश्यकता का अनुभव किया। इस दिशा में ठोस कदम उठाने में एक अंग्रेज अधिकारी ए० ओ० ह्यूम (A.O. Hume) ने नेतृत्व प्रदान किया। ए० ओ० ह्यूम को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जनक भी कहा जाता है।

बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में 28 दिसम्बर 1885 को एक कान्फरेन्स का आयोजन किया गया। जिसमें देश के विभिन्न भागों के 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। काफी वाद-विवाद के बाद नयी संस्था का नाम इंडियन नेशनल कांग्रेस (Indian National Congress) रखा गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता उमेशचन्द्र बनर्जी ने किया था। इस प्रकार, भारत की उस महान राष्ट्रीय राजनीतिक संस्था का जन्म हुआ जिसके नेतृत्व में 62 वर्ष तक भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी और 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की।

कांग्रेस का प्रारंभिक लक्ष्य सामाजिक था इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध करना नहीं था और नहीं राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करना, भले इसका उद्देश्य बाद में राजनीतिक हो गया। राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण कांग्रेस का शैशव काल कहा गया। 1885 से 1905 ई० में कांग्रेस ने सुधारवादी नीति को अपनाया। जनता की माँगों को सरकार तक पहुँचाया। इस युग को सुधार का युग (Era of Reforms) कहा जाता है। कांग्रेस के प्रारंभिक दिनों में अत्यंत उदार माँग पाते हैं। वे उड़ने वाले आदर्शवादी नहीं थे,

Scanned with CamScanner

बल्कि व्यावहारिक सुधारक तथा उदारवाद की सिद्धांतों पर अमल करने वाले थे उन्होंने सुधार के ऐसे प्रस्तावों को सरकार के समक्ष रखा जिनका कम से कम विरोध हो। इस युग को भिक्षा देहि की नीति भी कहा जाता है। भारतीय राष्ट्रीयता की आवाज कांग्रेस ने ही सर्वप्रथम बुलंद की। उन दिनों कांग्रेस के नेता भारतीय राष्ट्रीयता के जनक माने जाते हैं। भारतीय राष्ट्रीयता की नींव कांग्रेस ने ही डाली।

कांग्रेस की स्थापना में ब्रिटिश सरकार का पूर्ण सहयोग रहा, इसकी स्थापना के विचार का सरकार ने स्वागत किया और इसके संस्थापकों को प्रोत्साहित किया। लेकिन 1888ई० से सरकार के नीति में परिवर्तन होना आरंभ हो गया। ब्रिटिश शासक वर्ग का सहयोग संदेह में बदलने लगा। इसका कारण था कांग्रेस की प्रगति से राष्ट्रीय भावना का प्रचार अधिक द्रुतगति से होने लगा। अतः शासक वर्ग कांग्रेस के प्रति सशंकित हो गये और खुले तौर पर इसका विरोध करने लगे। सरकारी विरोध के उपरांत भी कांग्रेस दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली और कठोर होता चला गया।

उदारवादियों के विचार :— कांग्रेस के शैशव काल को उदारवाद का युग कहा जाता है। (1885-1905) के काल में नरम या उदार विचार के व्यक्तियों का नियंत्रण था। इनके विचारों में निम्नलिखित तत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

1. पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्थाओं के पोषक :— इस युग के नेता पाश्चात्य सभ्यता तथा विचार से पूर्ण रूप से प्रभावित थे। इसका कारण था इनकी शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य देशों में पाई जाने वाली संस्थाओं में उन्हें विश्वास था, वे मुख्यतया उच्च वर्ग के थे। उन नेताओं में दादाभाई नौरोजी डी० ई० वाचा, उमेशचन्द्र बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, फिरोजशाह मेहता आनंद चार्लू, लाल मोहन घोष तथा गोपाल कृष्ण गोखले के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. क्रमिक सुधार में विश्वास :— उदारवादी व्यक्ति क्रांतिकारी परिवर्तनों में विश्वास नहीं करते थे। वे चाहते थे कि राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में क्रमिक सुधार लाया जाय। उदारवादी स्वशासन या स्वराज्य की मांग की मांग की और यह भी स्वीकार किया कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के

Scanned with CamScanner

इसलिये ब्रिटिश शासन के छत्रछाया में प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अत: उदारवादी नेता क्रांतिकारी परिवर्तन के विरुद्ध थे।

3. वैधानिक तरीकों में विश्वास :— उदारवादियों को वैधानिक तरीके में पूरा विश्वास था। वे सरकार से किसी भी कीमत पर लड़ने को तैयार नहीं थे। वे अपने विचार को प्रार्थनापत्रों, प्रार्थनाओं, प्रदर्शनों, स्मारपत्रों और प्रतिनिधिमंडलों द्वारा सरकार से अपनी न्यायपूर्ण माँगों को मानने का आग्रह करते थे। वे अपने विचार की याचना सरकार से बड़े विनम्र शब्दों में करते थे। इतिहासकार इसे 'भिक्षावृति' की संज्ञा देते थे।

4. ब्रिटेन के साथ स्थायी संबंध की स्थापना भारत के हित में :— उदारवादी नेता पाश्चात्य सभ्यता के पोषक थे। उनके दृष्टिकोण में ब्रिटेन से भारत का संबंध भारतीयों के लिए वरदान स्वरूप था। उनका मत था कि आंग्ल विचार और पद्धति लोगों में स्वतंत्रता और लोकतंत्र के प्रति आदर उत्पन्न करता है। अत: भारत के लिए यह श्रेयस्कर है कि ब्रिटेन से उसका अटूट संबंध बना रहे। इस संदर्भ में उदारवादी नेताओं के शब्द उल्लेखनीय हैं, ऐनीबेसेंट ने कहा था, इसकाल के नेता अपने को ब्रिटिश प्रजा मानने में गौरव का अनुभव करते थे। दादाभाई नौरोजी ने कहा था, कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने वाली संस्था नहीं है, वह तो ब्रिटिश सरकार की नींव दृढ़ करना चाहती है।

5. अँगरेजों की न्यायप्रियता में विश्वास :— उदारवादी युग के अधिकांश काँग्रेसी नेताओं को अँगरेजों की सभ्यता एवं न्यायप्रियता में विश्वास था। उनके विचार में अंगरेज स्वतंत्रता प्रेमी थे। यदि उन्हें भारतीयों की योग्यता पर विश्वास हो जाय तो उन्हें स्वशासन (Self-government) बिना हिचक दे देंगे। इस संबंध में श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के शब्द विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 'हमें अँगरेजों की न्यायप्रियता तथा उदारता में पूर्ण विश्वास है। संसार की महानतम प्रतिनिधि सभा, ब्रिटिश कॉमन्स सभा के स्वतंत्रता-प्रेम में हमारा असीम विश्वास है।' उदारवादी नेताओं के उक्तियों से स्पष्ट होता है कि उन्हें किस हद तक अँगरेजों की स्वतंत्रता और न्यायप्रियता में विश्वास था।

6. राजनीतिक स्वशासन की प्राप्ति :— उदारवादी नेता केवल कतिपय प्रशासनिक सुधार नहीं चाहते थे बल्कि उनका लक्ष्य भारतीयों के लिए स्वशासन की प्राप्ति भी था। वे ब्रिटिश शासन के अंतर्गत स्वशासन की स्थापना चाहते थे। उनके विचार में ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारतीयों को स्वशासन प्राप्त हो सकता था। भारत स्वशासन के लिए पूर्ण तैयार था। स्वशासन के महत्व के संबंध में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने कहा था, स्वशासन ईश्वर की अवश्या ओर इच्छा है। प्रत्येक राष्ट्र को अपने भाग्य का स्वयं निर्णायक होना चाहिए।

उदारवादियों की सफलताएँ :— इतिहासकारों की दृष्टि में उदारवादी युग का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में कोई विशेष महत्व नहीं है। लेकिन उदारवादी युग को महत्वहीन कहना अनुचित होगा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों की निम्नलिखित महत्वपूर्ण देन है।

(i) भारतीय राष्ट्रीयता के जनक :— कांग्रेस के उदारवादी नेता ही भारतीय राष्ट्रीयता के जनक है। सर्वप्रथम उन्होंने ही सांप्रदायिकता तथा प्रांतीयता जैसी संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर भारतीय राष्ट्रीयता का नारा बुलन्द किया था। उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ पड़ी और स्वशासन तथा प्रशासनिक सुधारों की मांग की जाने लगी।

(ii) राजनीतिक शिक्षा :— उदारवादी आंदोलन के कारण भारत के भिन्न-भिन्न कोने में रहने वाले लोगों में पारस्परिक सम्पर्क हुआ। उनके बीच आपस में राजनीतिक विचारों का अदान प्रदान होने लगा। वे संयुक्त रूप से सुधार एवं स्वशासन के लिए सरकार से मांग करने लगे। उन्होंने भारतीयों का ध्यान प्रजातंत्र तथा प्रतिनिधिक संस्थाओं की ओर आकर्षित किया।

(iii) भारतीय परिषद अधिनियम 1892 (Indian Council Act 1892) :— उदारवादियों ने प्रशासन में सुधार लाने के लिए सरकार के सामने अनेक मांगे प्रस्तुत की। उनकी मांगों को सीमित अंश में पूरा करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1892 में एक अधिनियम पारित किया। भारत में प्रतिनिधिक मूलक संस्थाओं के विकास में यह पहला कदम था।

Scanned with CamScanner

(iv) भारतीय स्वतंत्रता - संग्राम का आधार (Base of the Struggle for Independence) :— भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की नींव उदारवादी नेताओं ने डाली थी। उन्होंने ही भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया। एनी बेसेंट ने लिखा है कि नरम दल के नेताओं ने ही हमको इस योग्य बनाया कि हम स्वतंत्रता की माँग सरकार के सामने रख सकें।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि साधारण सफलताओं के बावजूद उदारवादी युग का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में विशेष महत्व है।

Scanned with CamScanner